प्राचीन भारतीय चिंतन की राजनीति विज्ञान के प्रमुख देनो का उल्लेख करे

प्राचीन भारत में राज्य और शासन की अनेक संस्थाओं का विकास हुआ तथा साथ ही साथ राज्य और शासन के विषय में प्राचीन आचार्यों ने अनेक मूल्यावान सिद्धांत एवं विचार दिए।

इनका संक्षिप्त विवेचन निम्नलिखित है जो इस प्रकार है।--

1. धर्म एवं राजनीति का समन्वय

प्राचीन हिंदू विचारकों की यह एक महत्वपूर्ण देन है। उनका उद्देश्य था कि नैतिकता विहीन राजनीति प्रजा के हितों के विरूद्ध है प्रजा के हित के लिए उन्होंने धर्म को सर्वोपरि सत्ता माना। प्रजा धर्मानुसार जीवन यापन करती थी। राजा भी धर्म के अधीन था। परंतु धर्म का अर्थ आज के Religion से भिन्न था जिससे संपूर्ण समाज का पूर्ण तथा सर्वांगीण विकास हो वहीं धर्म था। धर्म की रक्षा करना राजा का प्रमुख कर्तव्य माना गया तथा धर्म के विरूद्ध आचरण करने वाले को दंड देने की व्यवस्था की गई। यह शासन का नियमन आज के विधि के शासन के सदृश है। भारतीय विचारकों ने व्यक्ति और समाज की पूर्णता एवं अभ्युदय के लिए वर्णाश्रम धर्म की व्यवस्था की।

2. राज्य तथा शासन संबंधी सिद्धांत

(क) राज्य की उत्पत्ति संबंधी सिद्धांत

राज्य की उत्पत्ति के आधुनिक काल के चारों सिद्धांतों देवी सिद्धांत, शक्ति सिद्धांत समझौतावादी सिद्धांत तथा विकासवादी सिद्धांत का उल्लेख पाश्चात्य विद्वानों से बहुत पहले प्राचीन भारतीय विचारक प्रतिपादित कर चुके हैं। वेदों में इन चारों सिद्धांतों का वर्णन है।

(ख) राज्य के स्वरूप के संबंध में सिद्धांत

पाश्चात्य विद्वानों ने आधुनिक काल में राज्य के 4 अनिवार्य तत्वों का प्रतिपादन किया है। जबकि प्राचीन भारतीय विद्वानों ने राज्य के 7 अंग स्वामी (राजा), अमात्य (मंत्री), दुर्ग (राजधानी), कोष, दंड, बल और सुहृद (मित्र) माने हैं।

इसके अतिरिक्त प्राचीन भारत में मध्ययुगीन यूरोप की भांति कभी भी राज्य सत्ता तथा धर्मसत्ता के मध्य संघर्ष नहीं हुआ।

(ग) राज्य का ध्येय

राज्य का ध्येय धर्म, अर्थ, काम की प्राप्ति द्वारा मोक्ष की प्राप्ति में सहायक होना था। प्राचीन भारतीय राज्य का मुख्य उद्देश्य प्रजा की समृद्धि तथा सभी क्षेत्रों में इसके कल्याण के लिए आवश्यक और उपयोगी कार्य करना था। इस प्रकार प्राचीन भारतीय राज्य का मुख्य उद्देश्य मानव की सर्वांगीण उन्नति था जिसे बहुत बाद में अरस्तु ने व्यक्त किया।

(घ) कल्याणकारी राज्य

प्राचीन हिंदू राज्य अपने कार्य क्षेत्र के विषय में किसी सीमा से बंधे हुए नहीं थे। इसके कार्य व्यापक रूप से पितातुल्य थे। महाभारत, स्मृतियों तथा कौटिल्य के अर्थशास्त्र में वर्णित राज्य अपने आदर्श रूप में आज के कल्याणकारी राज्य से अधिक ही थे।

(ड़) शासन के विभिन्न रूप

प्राचीन भारत में राजतंत्र अधिक समय तक प्रचलित रहा परंतु अनेक गणतंत्रों का उदय एवं विकास भी हुआ। राजतंत्र भी प्रजातंत्रात्मक रूप में स्थापित था। प्रजातंत्रात्मक आदर्श हिंदू चिंतन की एक प्रमुख विशेषता रही है। राजतंत्र में सभा और समिति जैसी जनप्रिय संस्थाओं का अपना विशेष महत्व रहा है । शासन उनके परामर्श एवं सहयोग से ही संचालित होता था। यद्यपि हिंदू राजा सिद्धांततः निरंकुश माने जाते हैं तथापि व्यवहार में वे प्रजा की इच्छाओं का आदर करते थे। राजा प्रजा में पिता और पुत्र जैसा संबंध था। आज भी हम रामराज्य की स्थापना की कल्पना करते हैं।

3. प्रशासन के क्षेत्र में योगदान

प्रशासन के क्षेत्र में प्राचीन भारतीय राज्य अत्यंत विकसित थे। न्याय प्रशासन और न्यायिक प्रक्रिया अत्यंत विकसित थी तथा न्याय संबंधी उच्च सिद्धांतों पर आधारित थी। आय-व्यय की व्यवस्था, कर प्रणाली लोक सेवाओं प्रशासन कार्य का विभिन्न विभागों में विभाजन, सचिवालय आदि का समुचित विकास हो चुका था। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में प्रशासनिक व्यवस्था का विस्तार में उल्लेख किया गया है जबकि इस प्रकार का प्रशासन के क्षेत्र में विकास पश्चिम के देशों में कई शताब्दी बाद हुआ।

4. स्थानीय स्वशासन

प्रारंभ से ही भारत में भिन्न-भिन्न प्रकार की स्थानीय स्वशासन की संस्थाओं का अस्तित्व विद्यमान रहा है। जैसे ग्राम सभा, नगर परिषद, राजधानी परिषद, कुल श्रेणी आदि। इनके द्वारा जनता स्वयं या प्रतिनिधियों के द्वारा प्रशासन में भाग लेती थी।

5. अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के क्षेत्र में

प्राचीन भारतीय विद्वानों ने राज्यों के पारस्परिक संबंधों के विषय में अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्धांतों का प्रतिपादन किया है। प्राचीन षड्गुण्य सिद्धांत मंडल सिद्धांत, दूत एवं चर व्यवस्था एवं सन्धि के सिद्धांत आदि महत्वपूर्ण सिद्धांत हैं जो आज भी अपनाये जाते हैं। इस प्रकार यह सिद्ध होता है कि प्राचीन भारत में राजनीति के अनेक सिद्धांतों का ज्ञान था तथा राजशास्त्र को वैज्ञानिक आधार पर विकसित किया गया था। इतना हीं नहीं कुछ विद्वानों का मत है कि भारतीय चिंतन ने पश्चिमी चिंतन को प्रभावित किया है।

लंदन विश्वविद्यालय के प्रो. डरविक ने अपनी पुस्तक (Message of Plato) में लिखा है कि जो व्यक्ति प्लेटो की रिपब्लिक को समझना चाहे उसे हिंदू विचारधारा पहले जाननी चाहिए। उनका कहना है कि जैसे मनु ने मनुष्य की सात्विक, राजसिक तथा तामसिक मनोवृत्तियों के आधार पर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य के रूप में वर्ण व्यवस्था का प्रतिपादन किया ठीक वैसे ही प्लेटो ने मनुष्य के तीन मानसिक तत्वों के आधार पर समाज को तीन श्रेणियों में बांटा। प्लेटो की सामाजिक व्यवस्था की श्रेणी में निम्नतम स्थान किसानों तथा व्यापारियों का है ।जो मनु के वैश्यों के समान है। सामाजिक श्रेणी व्यवस्था में इसके ऊपर की श्रेणी प्लेटो के शब्दों में सेना की सिपाहियों की है। जो मनु के क्षत्रियों के समान है। सबसे उच्च श्रेणी को प्लेटो ने संरक्षक (Guardian) कहा है जिसे मनु ने ब्राह्मण का नाम दिया है। इस प्रकार स्पष्ट है कि ग्रीक चिंतन पर भी प्राचीन भारतीय चिंतन का बड़ा भारी प्रभाव है। रोम के राजनीतिक चिंतन पर भी भारतीय चिंतन का प्रभाव देखने को मिलता है।